. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

हिन्दी १९६३

७९

भाज विकासमाला

...र्ज़ी ग़ालिब

हिन्दी
६९

...साहित्य मण्डल प्रकाशन

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

समाज-विकास-माला : १४५

मिर्ज़ा ग़ालिब

जीवन-परिचय और शायरी के नमूने

लेखक
गोपालकृष्ण कौल

नि १२८५

हिन्दी १६३

सम्पादक
यशपाल जैन

पुस्तक सेंट के निमित्त है

१९६१
सस्ता साहित्य मंडल-प्रकाशन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय,
मंत्री, सस्ता साहित्य मण्डल
नई दिल्ली

पहली बार : १९६१
मूल्य
सैंतीस नये पैसे

मुद्रक
भारत-मुद्रणालय,
शाहदरा-दिल्ली

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

समाज-विकास-माला

हमारे देश के सामने आज सबसे बड़ी समस्या करोड़ों आदमियों की शिक्षा की है। इस दिशा में सरकार की ओर से यदि कुछ कोशिश हो रही है तो वही काफी नहीं है। यह बड़ा काम सबकी सहायता के बिना पार नहीं पड़ सकेगा।

बालकों तथा प्रौढ़ों की पढ़ाई की तरफ जबसे ध्यान गया है, ऐसी किताबों कि मांग बढ़ गई है, जो बहुत ही आसान हों, जिनके विषय रोचक हों, जिनकी भाषा मुहावरेदार और बोलचाल की हों और जो मोटे टाइप में बढ़िया छपी हों।

यह पुस्तक-माला इन्हीं बातों को सामने रखकर निकाली गई है। इसमें कई पुस्तकें निकल चुकी हैं। इन सबकी भाषा बड़ी आसान है। विषयों का चुनाव बहुत सावधानी से किया गया है। छपाई-सफाई के बारे में भी विशेष ध्यान रखा गया है। हर किताब में चित्र भी देने की कोशिश की है।

यदि पुस्तकों की भाषा, शैली, विषय और छपाई में किसी सुधार की गुंजाइश मालूम हो तो उसकी सूचना निस्संकोच देने की कृपा करें।

—मंत्री

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

पाठकों से

उर्दू के शायरों में मिर्ज़ा ग़ालिब का नाम बड़ा ऊंचा है। उनकी रचनाओं को आज भी बहुत मान से पढ़ा जाता है।

इस किताब में मिर्ज़ा ग़ालिब का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। पाठक देखेंगे कि अपने जीवन में उन्होंने कितनी मुसीबतें उठाईं, पर अपनी आन और अपनी शान नहीं छोड़ी।

यह छोटी-सी जीवनी शिक्षा देती है कि आदमी को सिर ऊंचा करके जीना चाहिए और परेशानियां होने पर भी अपनी राह नहीं छोड़नी चाहिए।

—सम्पादक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

मिर्ज़ा ग़ालिब

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

मिर्ज़ा ग़ालिब

: १ :

मिर्ज़ा ग़ालिब का पूरा नाम मिर्ज़ा असद उल्ला ख़ां था। उनका जन्म अपनी ननिहाल में २७ दिसम्बर सन् १७९७ की रात को हुआ।

उनके पिता अब्दुल्ला बेग ख़ां नौकरी की वजह से एक जगह अधिक दिन तक नहीं रह पाते थे। इसलिए उनके बाल-बच्चे उनकी ससुराल में रहते थे। अब्दुल्ला-बेग अलवर के राजा बख़तावरसिंह के यहां काम करते थे। अचानक एक लड़ाई में सन् १८०२ में वह मारे गए। उस समय ग़ालिब कुल पांच साल के थे। पिता के मरने के बाद उनके चचा ने उनकी देखभाल की; लेकिन एक साल के बाद वह भी चल बसे।

पिता और चचा के न रहने पर भी ग़ालिब का बचपन आराम से बीता। ननिहाल की हालत अच्छी थी। आराम और ख़ुशहाली में पलनेवाले ग़ालिब ने उस समय की बहुत-सी भली और बुरी बातें सीखीं। वह बच-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

पन से पढ़ने-लिखने में होशियार थे। शुरू में उन्होंने फ़ारसी पढ़ी और बड़े-बड़े कवियों की कविताओं को समझने लगे। छुटपन में ही वह फ़ारसी में ग़ज़ल लिखने लगे। ईरान से आये हुए किसी मौलवी से उन्होंने अरबी सीखी।

इस तरह ग़ालिब को बचपन से ही पढ़ने-लिखने का सुभीता रहा और अच्छे लोगों के साथ उठने-बैठने का मौका मिला। लेकिन दूसरी तरफ बाप और चचा के न रहने से उनपर कोई रोक न रही। नतीजा यह हुआ कि दोस्तों की संगत में पड़कर वह शतरंज खेलना, पतंग उड़ाना, नाच-गानों की महफ़िलों में जाना और शराब पीना भी सीख गये।

तेरह साल की उम्र में उनकी शादी हो गई। उमराव बेगम उस समय ग्यारह साल की थी। ग़ालिब के ससुर रईस थे और ठाट-बाट से रहते थे। उन दिनों ग़ालिब भी कम शान से नहीं रहते थे। उनका चेहरा खूबसूरत था। कद लम्बा और रंग गोरा था। नाक-नक्श तीखे थे। इस सुन्दरता और सुडौल शरीर में ईरानी खून था। उनके पुरखे ईरानी राजवंश के थे और ईरान से भारत आये थे।

शादी के दो-तीन साल बाद ग़ालिब अपनी बेग़म

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

के साथ दिल्ली चले गये।

: २ :

कवि पैदा होते हैं, बनाये नहीं जाते, यह कहावत ग़ालिब पर पूरी तरह लागू होती है। जब वह नौ-दस बरस के थे तब वह फ़ारसी और उर्दू दोनों में कविता करने लगे थे। बचपन की हद पार करते-करते ग़ालिब ने अनगिनत कविताएं लिख डाली थीं। उस समय के मशहूर शायर मीर ने कहा था कि अगर इस लड़के को कोई अच्छा गुरु मिल जाय तो यह बेजोड़ शायर बन सकता है।

शायर के रूप में ग़ालिब का जीवन दिल्ली आने के बाद शुरू हुआ। पहले वह 'असद' नाम से लिखते थे। यह उनके पूरे नाम का एक हिस्सा था, लेकिन 'असद' नाम के एक और शायर थे। उनका एक शेर था :

असद तुमने बनाई यह ग़ज़ल खूब।
अरे ओ शेर, रहमत है ख़ुदा की॥

यह शेर ग़ालिब को इतना बुरा लगा कि उन्होंने 'असद' अपना नाम छोड़ दिया और 'ग़ालिब' के नाम से लिखने लगे। उस समय के कुछ शायर ग़ालिब से चिढ़ते

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

थे। उन्होंने कहना शुरू किया कि ग़ालिब की कविताएं मुश्किल होती हैं और समझ में नहीं आती। असल बात यह थी कि ग़ालिब की शायरी में बारीकी थी। जिनमें यह सिफ़त नहीं थी वे ही उनसे खिंचे रहते थे। एक बार मुशायरे में एक शायर ने ग़ालिब को चिढ़ाते हुए कहा :

अगर अपना कहा तुम आप ही समझे तो क्या समझे।
मज़ा कहने का जब है यक कहे औ' दूसरा समझे॥

ग़ालिब ने फ़ौरन जवाब दिया :

न सताइश की तमन्ना न सिले की परवा।
न सही गर मेरे अशआर में मानी न सही॥

—मुझे न तो इनाम की परवा है और न तारीफ़ की। अगर मेरी शायरी का मतलब नहीं निकलता तो न सही। मुझे परवाह नहीं।

असल में बात यह थी कि ग़ालिब को अपनी कलम पर भरोसा था और उसीके ज़ोर पर वह बराबर आगे बढ़ते गए। तबीयत के वह बड़े शाही थे। खुले हाथों खर्च करते थे। आनेवाले दिन की नहीं सोचते थे।

: ३ :

दिल्ली में उनके कुछ दिन बड़े ठाठ से गुज़रे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

साढ़े सात सौ की सालाना पेंशन नवाब से मिलती थी। कुछ माँ भेजती थीं, लेकिन सन् १८२२ में नवाब ने अपनी जायदाद का बंटवारा कर दिया। इसका सबसे बुरा असर ग़ालिब पर पड़ा। उनको पेंशन मिलने में अड़चनें पड़नें लगीं। ख़र्चा वैसा ही था, पर आमदनी कम हो गई। इसलिए कर्ज़ बढ़ने लगा। दूसरी ओर ग़ालिब का छोटा भाई पागल हो गया। ग़ालिब ने बड़ी कोशिश की कि उनकी पेंशन का मामला सुलझ जाय, लेकिन कुछ न हो सका। आखिर तंग आकर ग़ालिब ने दावा दायर किया और गवर्नर जनरल से मिलने के लिए कलकत्ता जाने का निश्चय किया।

दिल्ली से कलकत्ता जाने में उस समय बहुत दिन लगते थे। आने-जाने का सुभीता आज जैसा न था। ग़ालिब ने सोचा कि इस बहाने रास्ते के बड़े शहरों की सैर भी हो जायगी। मिर्ज़ा कानपुर, लखनऊ, बनारस और पटना होते हुए कलकत्ता गये। जब वह लखनऊ पहुंचे तो अवध के शासक को खबर दी गई। वह ग़ालिब से मिलने को तैयार हुआ, लेकिन ग़ालिब ने यह शर्त रखी कि जब वह मिलने के लिए जायं तब वह खड़े होकर उनका स्वागत करें। उन्होंने यह भी कहा कि वह नज़राना नहीं देंगे। शासक ने इन शर्तों को नहीं माना

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

और ग़ालिब उससे मिलने नहीं गये। ग़ालिब उन दिनों पैसे से बहुत तंग थे और अवध के बादशाह को सुनाने के लिए उन्होंने एक क़सीदा भी लिखा था; लेकिन अपना मान खोकर वह उनसे मिलने को तैयार न थे।

कई महीने लखनऊ में रहने के बाद वह इलाहाबाद होते हुए बनारस पहुंचे। उनको बनारस दिल्ली से भी ज्यादा अच्छा लगा। उन्होंने बनारस को स्वर्ग और भारत को काबा लिखा है। ग़ालिब ने फ़ारसी में बनारस की गंगा पर एक कविता भी लिखी।

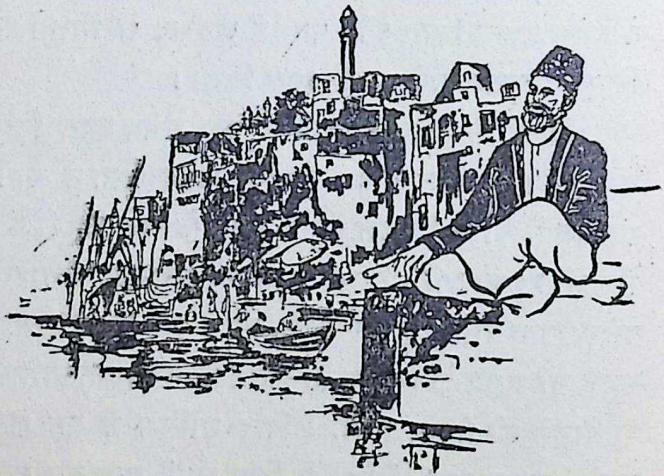

ग़ालिब बनारस में गंगा-तट पर

बनारस से पटना और मुर्शिदाबाद होते हुए वह कलकत्ता पहुंचे। वहां एक मकान किराये पर लेकर रहने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

लगे। बड़ी कोशिश और दौड़-धूप के बाद भी कलकत्ता में ग़ालिब को अपने काम में सफलता न मिली। इससे वह बड़े मायूस हुए। लेकिन शायर के रूप में ग़ालिब को बड़ा फायदा हुआ। बहुत-से फारसी और उर्दू के शायरों से मुलाकात हुई, मुशायरों में शरीक हुए और बहुत-सी कविताएं लिखने का मौका मिला। मुकदमे में सोलह साल लगे। सन् १८२८ में दावा दायर हुआ था। आखिरी फैसला सन् १८४४ में हुआ। इस सारी हैरानी का नतीजा यह निकला कि उन्हें कुल जमा में साढ़े बासठ रुपये महीने कलक्टरी से मिलने लगे और दरबार में कुर्सी और खिलअत पाने का उन्हें हक मिल गया।

: ४ :

इससे ग़ालिब को बहुत निराशा हुई। इन सोलह सालों में हजारों रुपये उनपर कर्ज हो गये थे। फिर घरेलू झगड़े बहुत बढ़ गये थे। चारों ओर से मुसीबतें थीं। इस दुखी जीवन में उनका सहारा उनकी शायरी थी। उनके स्वाभिमान में कमी नहीं आई। सन् १८४२ में दिल्ली कालेज में फारसी पढ़ाने के लिए एक उस्ताद रखने की बात तय हुई। अधिकारी ने ग़ालिब को उस

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

जगह पर काम करने के लिए बुलवाया। ग़ालिब उससे मिलने के लिए पालकी पर चढ़कर शान के साथ गये। वह दरवाजे पर जाकर रुक गये और इंतज़ार करने लगे कि अधिकारी उनका स्वागत करने के लिए दरवाजे पर आवे। लेकिन साहब का जमादार उनको लेने के लिए आया। ग़ालिब को इसमें तौहीन मालूम हुई और उन्होंने अन्दर जाने से इंकार कर दिया। तबतक साहब बाहर आ गया। उसने कहा, "इस वक्त आप नौकरी करने आये हैं, दरबार में नहीं।"

ग़ालिब ने जवाब दिया, "मैं तो समझता था कि सरकारी नौकरी से इज्जत बढ़ती है। लेकिन अब पता चला कि नौकरी से इज्जत घटती है। मैं यह नौकरी नहीं कर सकता।"

ग़ालिब ने संकटों के दिनों में भी इस तरह अपनी शान को बनाये रक्खा। इनके घर तब भी शतरंज और चौसर के खिलाड़ी जमा होते थे। कुछ शौकीनों ने जुआ खेलना शुरू कर दिया। मन बहलाने के लिए ग़ालिब ने भी मना नहीं किया; लेकिन आगे चलकर उनको इसका नतीजा भुगतना पड़ा। सन् १८४७ में वह जुए के अपराध में पकड़े गए और उन्हें छः महीने की जेल की सजा भुगतनी पड़ी। इससे इनको बहुत दुःख हुआ। उस समय

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

एक खत में उन्होंने लिखा : "मैं हरेक काम खुदा की तरफ से समझता हूं और खुदा से लड़ा नहीं जा सकता। मेरी यह आरजू है कि अब मैं दुनिया में न रहूं।"

उनकी तन्दुरुस्ती बिगड़ गई और वह तीन महीने बाद रिहा कर दिये गए।

: ५ :

उस समय भारत में मुग़ल बादशाहत के आखरी दिन थे। बहादुरशाह गद्दी पर थे। कुछ लोगों की सिफारिश पर बहादुरशाह ने ग़ालिब को तैमूर वंश का इतिहास फारसी में लिखने के लिए किले में नौकरी दे दी। पचास रुपये महीना मिलने लगा और ख़िताब के साथ दरबार में इज्जत भी मिली। ग़ालिब ने सन् १८५२ में तैमूरवंश के इतिहास का पहला भाग तैयार कर लिया। ग़ालिब को बहादुरशाह बहुत मानते थे, लेकिन उतना नहीं, जितना अपने उस्ताद 'ज़ौक' को। 'ज़ौक' से ग़ालिब की छेड़छाड़ चलती रहती थी। जब 'ज़ौक' चल बसे तब बहादुरशाह ग़ालिब को उस्ताद मानने लगे।

ग़ालिब मज़हब के मामले में कट्टर नहीं थे। एक बार रमज़ान के बाद बहादुरशाह ने गालिब से पूछा, "बताओ मिर्ज़ा, कितने दिन रोज़े रक्खे ?" ग़ालिब ने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

कहा, "एक दिन भी रोज़ा नहीं रखा।" फिर यह क़िता सुना दिया :

इफ़्तारे सूम की कुछ अगर दस्तगाह हो।
इस शख़्स को ज़रूर है रोज़ा रखा करे।
जिस पास रोज़ा खोलके खाने को कुछ न हो
रोज़ा अगर न खावे तो नाचार क्यों करे !

बादशाह यह सुनकर हँस दिये।

उन दिनों अवध के नवाब वाजिद अली शाह से भी ग़ालिब को पांचसौ रुपये सालाना मिलने लगे। लेकिन वह सिलसिला अधिक दिन न चला। अंग्रेज़ों ने वाजिद-अली शाह को कैद कर लिया। सन् १८५७ के मई महीने में अंग्रेज़ों के खिलाफ़ गदर हुआ। इस गदर में बहादुरशाह पर बग़ावत करने का इलज़ाम लगाकर अंग्रेजों ने उनको रंगून भेज दिया। दिल्ली का हाल खराब हो गया। गोरों की संगीनें तनी थीं। लोगों की जान खतरे में थी। गदर के जमाने की दिल्ली का हाल ग़ालिब ने अपने खतों में इस तरह लिखा है :

"अपने घर में बैठा हूं। दरवाजे से बाहर नहीं निकल सकता। सवार होना और कहीं जाना तो बड़ी बात है। रहा यह कि कोई मेरे पास आवे ! शहर में है कौन जो मेरे पास आवे ? घर-के-घर बेचिराग पड़े हैं।"

Nepal Sanskrit University. Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

"अमीर-गरीब सब निकल गये। जो रह गए वे निकाले गए। जागीरदार, पेंशनदार, वैगरा कोई नहीं है।...हाल लिखते हुए डरता हूं। किले के नौकरों पर कड़ी नज़र है। इन लोगों की पूछ कुछ ज्यादा है और इनकी धर-पकड़ हो रही है। फौजी इन्तजाम बराबर जारी है।"

ग़दर के समय ग़ालिब दिल्ली के मुहल्ला बल्ली-मारान में रहते थे। एक दीवार बनाकर पटियाला के सिपाही इस मुहल्ले की रक्षा कर रहे थे। उस मुहल्ले के लोग बाहर नहीं निकलते थे। एक दिन गोरे सिपाही दीवार फांदकर इस मुहल्ले में घुस गए और मिर्ज़ा ग़ालिब को पकड़ ले गए। उनको कर्नल ब्राउन के सामने पेश किया गया। ब्राउन ने पूछा, "तुम मुसलमान हो?"

ग़ालिब ने जवाब दिया, "आधा मुसलमान हूं।"

ब्राउन ने पूछा, "आधा कैसे?"

ग़ालिब ने कहा, "शराब पीता हूं, सूअर नहीं खाता। इसलिए आधा मुसलसान हूं।"

इस बात पर ब्राउन हँस पड़ा और ग़ालिब को छोड़ दिया। लेकिन ग़ालिब की पेंशन बंद हो गई। पैसों की बड़ी तंगी थी। परेशान होकर सन् १८६० की जनवरी में यह नवाब रामपुर के पास गये। रामपुर के नवाब ने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

इनकी बड़ी इज्जत की और दो सौ रुपया महीना इनको देने लगे। मिर्ज़ा के बाल-बच्चे दिल्ली में ही थे। सो वह दिल्ली लौट आये। नवाब रामपुर ने अंग्रेज़ अफ़सरों से भी इनकी तारीफ़ की।

दिल्ली लौटते हुए मुरादाबाद में इनकी भेंट सर सैयद अहमद खां से हुई। सर सैयद की बात अंग्रेज बहुत मानते थे। उनके कहने पर इनको फिर सरकारी पेंशन मिलने लगी। बाद में रामपुर के नवाब चल बसे। ग़ालिब की आमदनी फिर कम हो गई। कर्ज़ तो पहले का था ही। बुढ़ापा आ गया और बीमारियां घेरने लगीं।

: ६ :

ग़ालिब की सबसे बड़ी खूबी यह थी कि उन्होंने मुसीबतों में भी लिखना नहीं छोड़ा। उर्दू और फारसी दोनों में लिखते रहे।

ग़ालिब को मुसीबतों ने दार्शनिक बना दिया था। जो अनुभव करते थे, उसीका निचोड़ लिख देते थे। उनका स्वभाव उदार था। सबसे प्रेम करते थे। घरेलू मसलों से कभी-कभी चिढ़ जाते थे, पर वह मज़ाक भी खूब करते थे। एक बार किराये पर लेने के लिए मकान देखने गये। साथ में उनकी बेगम भी थीं। बेगम ने एक

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

मकान देखकर कहा, "लोग कहते हैं कि इस मकान में बला रहती है।"

ग़ालिब ने फौरन कहा, "क्या तुमसे भी बढ़कर कोई बला है ?"

इसी तरह एक बार इनका तोता जाड़े के दिनों में पिंजरे के अन्दर परों में मुंह छुपाये सिकुड़ा बैठा था। उसे देखकर ग़ालिब बोले, "अबे, तू किस फिक्र में सिर छुपाये है ? तेरे न जोरू है, न बाल-बच्चे। फिर क्यों परेशान है ?"

एक बार इनका एक चेला दूसरी बीवी मरने के बाद तीसरी शादी करने लगा तो ग़ालिब ने उसे लिखा, "दो मरतबा बेड़ियां टूटने के बाद फिर इस फंदे में फंसता है।"

एक बार उनकी कोई बहन बीमार थी। वह देखने गये। हालत ख़राब थी। बहन ने कहा, "अब तो आखिरी दिन हैं। अफ़सोस यही है कि कर्ज़ न उतार सकी।"

ग़ालिब ने फौरन जवाब दिया, "इसमें फ़िक्र की क्या बात है ! खुदा के यहां मुफ्ती सदरुद्दीन खां थोड़े ही हैं, जो डिगरी करवा लेंगे।"

एक शराब के दूकानदार ने ग़ालिब पर कर्ज़े का दावा किया। कचहरी में मुकदमा हुआ। जब ग़ालिब से

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

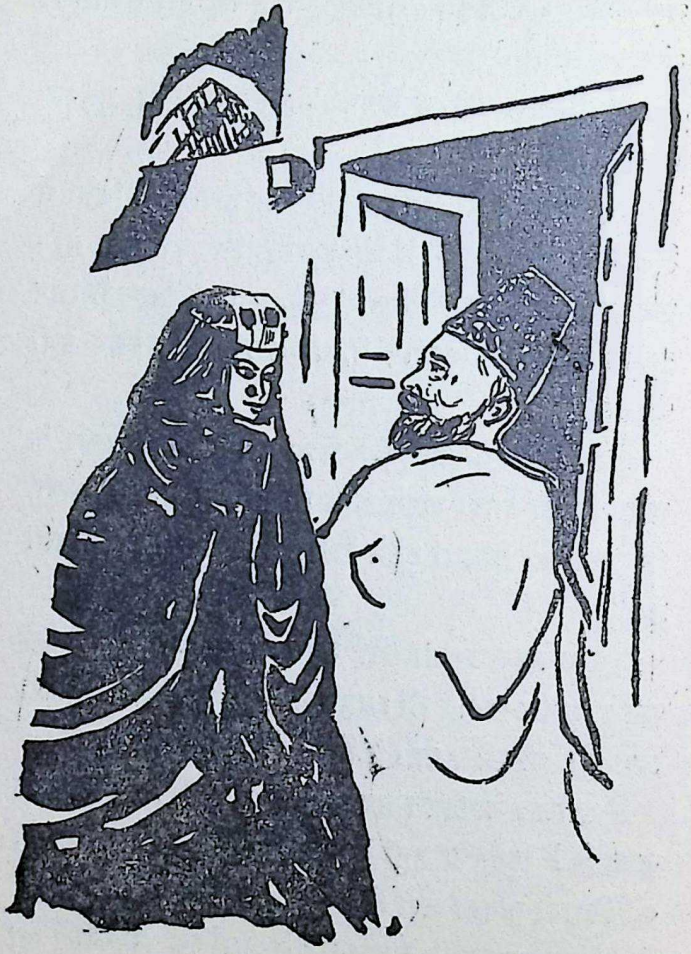

मिर्जा ग़ालिब और उनकी बेगम

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

बयान देने को कहा गया तो उन्होंने यह शेर सुना दिया—

"कर्ज़ की पीते थे मय लेकिन समझते थे कि हां
रंग लायेगी हमारी फाके मस्ती एक दिन।"

बीमारी के दिनों में एक मरतबा एक चेला उनके पैर दबा रहा था। ग़ालिब ने उससे कहा, "ऐसा करके मुझे क्यों गुनाहगार बनाते हो।" चेले ने कहा, "मजदूरी दे दीजियेगा।" जब वह पैर दबा चुका तो मजदूरी मांगी। ग़ालिब ने कहा, "कैसी मजदूरी? तुमने पैर दबाये। मैंने पैसे दबाये।"

: ७ :

ग़ालिब ने दिल्ली में अपने जीवन के करीब पचपन साल बिताये। वह नवाबों की तरह शौकीन थे। खाने-पहनने में अपनी पसन्द रखते थे। कपड़ों को बनाव-संवार से पहनते थे। घर की पोशाक अलग बाहर की अलग। ज्यादातर घर पर पाजामा और अंगरखा और बाहर चूड़ीदार पाजामा, अचकन, कुर्ता, सदरी आदि। साथ में घड़ी और शाल भी रखते थे। इसी तरह खाने में भी शौकीन थे। चने की दाल और कढ़ी उन्हें पसन्द थी। इसी तरह मेवा में बादाम और फलों में अंगूर और आम पसन्द थे। पीने में हुक्का और शराब। आम के बड़े

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

प्रेमी थे। उसकी तारीफ में उन्होंने लिखा है :

साहबे शाख़ो बर्गोबार है आम।
नाज़ पर्वर्दए बहार है आम।

—मिसरी को बोया गया और अमृत से सींचा गया, उससे जो पौधा उगा, आम उसीका फल है। इसको बहार पालती-पोसती है।

वह चने की दाल और बेसन से बनी चीजों की भी बड़ी तारीफ़ करते थे। बेसन की रोटी पर उन्होंने लिखा था :

न पूछ इसकी हक़ीक़त, हुजूरेवाला ने
मुझे जो भेजी है, बेसन की रोग़नी रोटी।
न खाते गेहूं, निकलते न खुल्द से बाहर,
जो खाते हज़रते आदम यह बेसनी रोटी।

मिर्ज़ा चने के बारे में एक कहानी सुनाया करते थे। एक बार चने ने ख़ुदा से फरिहाद की, "मुझे बहुत सताया जाता है। कभी मुझे भूना जाता है, कभी तला जाता है, कभी पीसा जाता है। मैंने क्या कुसूर किया है, जिसकी मुझे यह सजा मिल रही है?" ख़ुदा ने उसकी तरफ ललचाई आंखों से देखकर कहा, "भाग जा, भाग जा, वरना मैं भी तुझको खा जाऊंगा।"

ग़ालिब को नौकर-चाकर रखने का शौक था। घर

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

पर चार-पांच नौकर रहते थे। जब बाहर जाते थे, तो भी दो-तीन नौकर साथ रहते थे।

ग़ालिब लिखने के साथ पढ़ते भी रहते थे। उनको किस्से-कहानी और फारसी कविताओं को पढ़ने का विशेष चाव था। वैसे वह इतिहास और दर्शन के भी जानकार थे।

ग़ालिब खत लिखने में कमाल करते थे। खतों में वह अपना हाल ही नहीं लिखते थे, बल्कि दूसरों का हाल भी जानना चाहते थे। खत लिखने का ढंग ऐसा था कि तस्वीर खींच देते थे। उनके खतों में उनके जीवन की कहानी झलकती है और उनके जमाने का हाल पढ़ने को मिलता है। खत लिखने के बारे में ग़ालिब ने एक खत में लिखा है :

"खुदा का एहसान है कि कोई दिन ऐसा नहीं होता, जो दो-चार खत न आ जाते हों। बल्कि ऐसा भी दिन होता है कि दो बार डाक का हरकारा खत लाता है। दिन उनके पढ़ने और जवाब लिखने में गुज़र जाता है।" इनके खतों के कई संग्रह छप चुके हैं। पहले वह फारसी में खत लिखा करते थे। फिर उर्दू में लिखने लगे।

ग़ालिब का लिखने का तरीका बड़ा अजीब था। यह नहीं कि काग़ज़ कलम लेकर बैठे और लिखने लगे।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

मौलाना हाली ने इस बारे में लिखा है :

"वह अक्सर रात को फिक्र किया करते थे और जब कोई शेर अंजाम हो जाता था तो कमरबन्द में एक गिरह लगा लेते थे। इस तरह आठ-आठ, दस-दस गिरहें लगाकर सो जाते थे और दूसरे दिन सिर्फ याद पर सोच-सोचकर तमाम अशआर कलमबंद कर लेते थे।"

वह पहले सोचते थे, फिर मन-ही-मन कविता करते थे और उसके बाद काग़ज़ पर लिखते थे। इस तरह ग़ालिब ने फारसी में दस हजार से ऊपर कविताएं लिखीं, जिनमें सभी तरह की चीजें हैं। उनकी उर्दू कविताओं का संग्रह 'दीवाने-ग़ालिब' है, जिसमें हज़ार से ज्यादा शेर हैं।

: ८ :

ग़ालिब की गज़लें और शेर आज तक पढ़े जाते हैं। इसका कारण ग़ालिब की दुख-दर्द से भरी जिन्दगी है। उसीको उन्होंने अपनी रचनाओं में इस ढंग से प्रकट किया है कि उन्हें जो भी पढ़ता है, उसे लगता है, वह दर्द उसका अपना है। एक ओर तो ग़ालिब शानदार नवाबी ढंग के आदमी थे, दूसरी ओर वह जिन्दगी की मुसीबतों से लड़नेवाले इन्सान थे। इसीलिए उनकी

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

कविता में सच्ची भावना है। ग़ालिब जीवन में ढोंगी नहीं थे। वह किसी बंधन में नहीं बंधते थे। न उन्हें मज़हब बांध सका, न घर की तंग दीवारें। उनका मन आज़ाद था। इसलिए उनकी कविताओं में दर्द, सच्चाई और प्रेम है। पढ़नेवालों को उसमें अपने मन का भाव दिखाई देने लगता है।

उनकी शायरी के कुछ नमूने देखिये—

प्रेम पर किसीका ज़ोर नहीं है। यह ऐसी आग है, जो न तो लगाने से लगती है और न बुझाने से बुझती है।

इश्क पर ज़ोर नहीं, है यह वह आतिश ग़ालिब,
कि लगाये न लगे और बुझाये न बने।

... ...

विरह में प्रेमी का हाल खराब हो गया है। वह बीमार-सा लगता है। जिसे वह चाहता है, जब वह उसको देखने आता है तो प्रेमी का चेहरा खिल उठता है। इसपर ग़ालिब ने लिखा है :

उनको देखने से जो आ जाती है मुंह पर रौनक,
वह समझते हैं कि बीमार का हाल अच्छा है।

... ...

लोग स्वर्ग की बड़ी तारीफ करते हैं। ग़ालिब कहते हैं कि यह सच्चाई नहीं है, केवल दिल को बह-

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

लाने की बात है—

हमको मालूम है जन्नत की हक़ीक़त लेकिन,
दिल को खुश करने को ग़ालिब य' ख्याल अच्छा है।

... ...

यह जीवन खून के रूप में शरीर में दौड़ता है। लेकिन यह खून अगर किसी के दुःख से दुखी होकर आंसू की बूंद नहीं बना तो क्या है। इसी भाव को ग़ालिब कहते हैं—

रगों में दौड़ने-फिरने के हम नहीं क़ायल,
जब आंख ही से न टपका तो फिर लहू क्या है।

... ...

जब किसी दोस्त से मिलने की आशा टूट गई हो और वह अचानक घर पर आजाय तो क्या हाल होता है ? गालिब कहते हैं—

वह आये घर में हमारे, खुदा की कुदरत है,
कभी हम उनको, कभी अपने घर को देखते हैं।

... ...

आदमी की इच्छा-शक्ति को ग़ालिब इस शेर में अपने ढंग से पेश करते हैं। हाथों में इतनी ताक़त नहीं कि वह प्याला उठाकर अपने होठों से लगा सके। फिर भी वह कहता है कि प्याले और सुराही को सामने

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

रखा रहने दो, क्योंकि आंखों में अभी देखने की ताकत तो है।

गो हाथ को जुम्बिश नहीं, आंखों में तो दम है,
रहने दो अभी साग़रे[1] मीना मेरे आगे।

... ...

ग़ालिब का एक बहुत सादा, लेकिन गहरे भावों-वाला शेर है—

मत पूछ कि क्या हाल है मेरा तेरे पीछे,
तू देख कि क्या रंग है तेरा मेरे आगे।

... ...

प्रेम में जीवन और मरण में भेद नहीं रहता है। आदमी जिसपर मरता है, उसीको देखकर जी उठता है—

मुहब्बत में नहीं है फ़र्क, जीने और मरने का,
उसीको देखकर जीते हैं, जिस काफ़िर पे दम निकले।

... ...

कोई उम्मीद बर नहीं आती
कोई सूरत नज़र नहीं आती।
मौत का एक दिन मुअय्यन[2] है
नींद क्यों रात भर नहीं आती।

---

१. प्याला और सुराही २. तय

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding.

मिलना तेरा अगर नहीं आसाँ, तो सहल है,
दुश्वार[1] तो यही है कि दुश्वार भी नहीं।
इस सादगी पे कौन न मर जाये, ऐ ख़ुदा,
लड़ते हैं और हाथ में तलवार भी नहीं।

... ...

हम क्या कहें किसीसे, क्या है तरीक़ अपना,
मज़हब नहीं है कोई, मिल्लत नहीं कोई।

... ...

दिल आपका, कि दिल में है जो कुछ आपका,
दिल लीजिए, मगर मेरे अरमाँ निकाल के।

... ...

चंद तस्वीरें बुतां, चंद हसीनों के ख़तूत,[2]
बाद मरने के, मेरे घर से यह सामाँ निकला।

... ...

इब्ने मरियम[3] दुआ करे कोई,
मेरे दर्द की दवा करे कोई।
बक रहा हूं जुनूं में क्या-क्या कुछ,
कुछ न समझे ख़ुदा करे कोई।
न सुनो, गर बुरा कहे कोई,
न कहो, गर बुरा करे कोई।

१. कठिन २. पत्र ३. मरियम का बेटा ईसा

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

रोक लो, गर ग़लत चले कोई,
बख़्श दो, गर ख़ता करे कोई।
कौन है, जो नहीं है हाजतमन्द,
किसकी हाज़त रवा करे कोई।

... ...

ग़ालिब की कविताओं के ये तो बहुत थोड़े नमूने हैं। उन्हों ने लिखा है और बहुत लिखा है। उनकी कविताओं को पढ़कर लोग झूम उठते हैं। इसकी वजह यह है कि अपनी कविताओं में उन्होंने महज हवाई उड़ानें नहीं भरीं, बल्कि जो कुछ लिखा है, अपने तजरबे से लिखा है। वह ज़िन्दगी के कवि थे, तभी तो उनकी कविताओं में ज़िन्दगी बोलती है।

फिर उनकी लिखने की शैली निराली है। गहरी-से-गहरी बात को उन्होंने बड़े ही आसान शब्दों में कहा है। नतीजा यह कि उनकी कविताओं को सब समझ सकते हैं, सब उनमें रस ले सकते हैं।

कविता बहुत लोग लिखते हैं। कोई-कोई उसमें ऊंचे दर्जे की कला डालते हैं, लेकिन समय की कसौटी पर वह कविता उतरती है, जिसमें ज़िन्दगी की धड़कन होती है। ग़ालिब को गुज़रे ९२ बरस बीत गये; लेकिन उनकी कविता के लिए लोगों में आज

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding.

भी वैसा ही चाव बना हुआ है, बल्कि ज्यों-ज्यों वक्त गुज़रता जाता है, वह चाव और बढ़ता जाता है।

उर्दू के कवियों में ग़ालिब की अपनी जगह है और वह सदा बनी रहेगी।

आखिरी दिनों में ग़ालिब और उनकी बेगम रह गये थे। ग़ालिब को बुढ़ापे में कई रोगों ने आ दबाया।

१५ फरवरी १८६९ को दिमाग़ पर फालिज पड़ने से ग़ालिब इस दुनिया से कूच कर गये। ग़ालिब चले गये, पर अपनी रचनाओं में वह हमेशा ज़िन्दा रहेंगे।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

'खंडल' द्वारा प्रकाशित प्रमुख साहित्य

ात्मकथा	(गांधीजी)	४.००	स्वराज्य-शास्त्र	(विनोबा)	०.५०
ात्मकथा	(संक्षिप्त)	,, १.००	सर्वोदय-संदेश	,,	१.५०
र्थना-प्रवचन : २ भाग		,, ५.५०	गांधीजी को श्रद्धांजलि	,,	०.३७
ीता-माता		,, ४.००	भूदान-यज्ञ	,,	०.२५
द्रह अगस्त के बाद		,, २.००	राजघाट की संनिधि में	,,	०.६२
र्मनीति		,, २.००	विचार-पोथी	,,	१.००
० अफ्रीका का सत्याग्रह		,, ३.५०	सर्वोदय का घोषणा-पत्र	,,	०.२५
रे समकालीन		,, ५.००	उपनिषदों का अध्ययन	,,	१.००
ात्म-संयम		,, ३.००	कुछ पुरानी चिट्ठियां (नेहरू)		१०.००
ीता-बोध		,, ०.५०	इतिहास के महापुरुष	,,	३.००
नासक्तियोग		,, १.५०	मेरी कहानी (संपूर्ण)	,,	८.००
ाम-सेवा		,, ०.३७	,, (संक्षिप्त)	,,	२.५०
ंगल-प्रभात		,, ०.३७	हिन्दुस्तान की समस्याएं	,,	२.५०
र्वोदय		,, ०.३७	राष्ट्रपिता	,,	२.००
ीति-धर्म		,, ०.३७	राजनीति से दूर	,,	२.००
ाश्रमवासियों से		,, ०.४०	विश्व-इतिहास की झलक (सं०)		६.००
हमारी मांग		,, १.००	हिंदुस्तान की कहानी (संक्षिप्त)		२.५०
एक सत्यवीर की कथा		,, ०.२५	गांधीजी की देन (राजेंद्रप्रसाद)		१.५०
िंद-स्वराज्य		,, ०.७५	आत्मकथा	,,	८.००
नीति की राह पर		,, १.००	राजाजी की लघु कथाएं (राजाजी)		१.५०
ापू की सीख		,, ०.५०	महाभारत-कथा	,,	५.००
ांधी-शिक्षा (तीन भाग)		,, ०.९२	कुब्जा-सुन्दरी	,,	२.२५
ाज का विचार (दो भाग)		,, ०.७४	शिशु-पालन	,,	०.५०
ह्मचर्य (दो भाग)		,, ०.७५	दशरथनन्दन श्रीराम	,,	५.००
ांधीजी ने कहा था (९ भाग)		२.७०	मैं भूल नहीं सकता		२.५०
ांति-यात्रा	(विनोबा)	१.५०	कारावास-कहानी		७.५०
िनोबा के विचार : २ भाग		३.००	गांधी की कहानी		१.५०
ीवन और शिक्षण		,, २.००	इंग्लैंड में गांधीजी		१.२५
स्थितप्रज्ञ-दर्शन		,, १.००	बा, बापू और भाई		०.५०
ईशावास्यवृत्ति		,, ०.७५	गांधी-विचार-दोहन		१.५०
ईशावास्योपनिषद्		,, ०.१२	संत-सुधासार (संक्षिप्त)		६.००
सर्वोदय-विचार		,, १.१२	श्रद्धाकण		०.७५

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

अयोध्याकांड	१.००	रामतीर्थ-संदेश (३ भाग)	१.
भागवत-धर्म	५.५०	रोटी का सवाल (क्रोपाटकिन)	३.
मानवता के झरने	१.५०	नवयुवकों से दो बातें ,,	०.
बापू	२.००	पुरुषार्थ	६.
रूप और स्वरूप	०.७५	कश्मीर पर हमला	२.
डायरी के पन्ने	१.००	शिष्टाचार	०.
ध्रुवोपाख्यान	०.३०	तट के बंधन	२.
स्त्री और पुरुष (टाल्स्टाय)	१.००	नवीन यात्रा	२.
मेरी मुक्ति की कहानी ,,	१.५०	तूफान और ज्योति	२.
प्रेम में भगवान ,,	२.५०	भारतीय संस्कृति	३.
जीवन-साधना ,,	१.५०	आधुनिक भारत	५.
कलवार की करतूत ,,	०.३५	फलों की खेती	३.
हमारे जमाने की गुलामी ,,	१.००	मैं तंदुरुस्त हूं या बीमार ?	१.
बुराई कैसे मिटे ? ,,	१.००	गांधीजी की छत्रछाया में	२.
बालकों का विवेक ,,	०.५०	भागवत-कथा	३.
हम करें क्या ? ,,	४.००	जय अमरनाथ	१.
धर्म और सदाचार ,,	१.२५	हमारी लोक-कथाएं	१.
अंधेरे में उजाला ,,	१.५०	संस्कृत-साहित्य-सौरभ	
ईसा की सिखावन	१.००	(३५ पुस्तकें) प्रत्येक	०.
कल्पवृक्ष	२.५०	समाज-विकास-माला	
जीवन-साहित्य	२.५०	(१५१ पुस्तकें) प्रत्येक	०.
साहित्य और जीवन	२.५०	कृषि-ज्ञान-कोष	४.
कब्ज	१.००	प्रकाश की बातें	१.
हिमालय की गोद में	२.००	ध्वनी की लहरें	१.
कहावतों की कहानियां	२.२५	गरमी की कहानी	१.
जीवन-संदेश	१.२५	धरती और आकाश	१.
अशोक के फूल	३.००	समुद्र के जीव-जंतु	१.
कांग्रेस का इतिहास (संक्षिप्त)	६.००	रूस में छियालीस दिन	३.
सप्तदशी	२.००	मैं इनका ऋणी हूं	२.
रीढ़ की हड्डी	१.५०	सुभाषित-सप्तशती	२.
अमिट रेखाएं	३.५०	शारदीया	१.
तामिल-वेद	१.५०	आंसू और मुस्कान	१.
हमारे गांव की कहानी	१.५०	अमृत की बूंदें	१.
खादी द्वारा ग्राम-विकास	०.७५	प्राकृतिक जीवन की ओर	१.
साग-भाजी की खेती	३.५०	कोई शिकायत नहीं	२.
पशुओं का इलाज	०.७५		

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

समाज-विकास-माला की पुस्तकें

१. बदरीनाथ
२. जंगल की सैर
३. भीष्म पितामह
४. शिवि और दधीचि
५. विनोबा और भूदान
६. कबीर के बोल
७. गांधीजी का विद्यार्थी-जीवन
८. गंगाजी
९. गौतम बुद्ध
१०. गांव सुखी, हम सुखी
११. निषाद और शबरी
१२. कितनी जमीन ?
१३. ऐसे थे सरदार
१४. चैतन्य महाप्रभु
१५. कहावतों की कहानियां
१६. सरल व्यायाम
१७. द्वारका
१८. बापू की बातें
१९. बाहुबली और नेमिनाथ
२०. तंदुरुस्ती हजार नियामत
२१. बीमारी कैसे दूर करें ?
२२. माटी की मूरत जागी
२३. गिरिधर की कुंडलियां
२४. रहीम के दोहे
२५. गीता-प्रवेशिका
२६. तुलसी-मानस-मोती
२७. दादू की वाणी
२८. नजीर की नज्में
२९. संत तुकाराम
३०. हजरत उमर
३१. बाजीप्रभु देशपांडे
३२. तिरुवल्लुवर
३३. कस्तूरबा गांधी
३४. शहद की खेती
३५. कावेरी
३६. तीर्थराज प्रयाग
३७. तेन की कहानी
३८. हम सुखी कैसे रहें ?
३९. गो-सेवा क्यों ?
४०. कैलास-मानसरोवर
४१. अच्छा किया या बुरा ?
४२. नरसी मेहता
४३. पंढरपुर
४४. ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती
४५. संत ज्ञानेश्वर
४६. धरती की कहानी
४७. राजा भोज
४८. ईश्वर का मंदिर
४९. गांधीजी का संसार-प्रवेश
५०. ये थे नेताजी
५१. रामेश्वरम्
५२. कब्रों का विलाप
५३. रामकृष्ण परमहंस
५४. समर्थ रामदास
५५. मीरा के पद
५६. मिल-जुलकर काम करो
५७. कालापानी
५८. पावभर आटा
५९. सवेरे की रोशनी
६०. भगवान के प्यारे
६१. हारूं-अल-रशीद
६२. तीर्थंकर महावीर
६३. हमारे पड़ोसी
६४. आकाश की बातें
६५. सच्चा तीरथ
६६. हाजिर-जवाबी
६७. सिंहासन-बत्तीसी : भाग १
६८. सिंहासन-बत्तीसी : भाग २
६९. नेहरूजी का विद्यार्थी-जीवन
७०. सूरजराज
७१. नाना फड़नवीस
७२. गुरु नानक
७३. हमारा संविधान
७४. राजेंद्रबाबू का बचपन
७५. परमहंस की कहानियां
७६. सोने का कंगन
७७. झांसी की रानी
७८. हुआ सवेरा
७९. बीरबल की बातें
८०. मन के जीते जीत
८१. मुरब्बी
८२. हरिद्वार
८३. सागर की सैर
८४. ज्ञानबान के रखवारे
८५. महामना मालवीय
८६. भर्तृहरि
८७. देवताओं का प्यारा
८८. देश यों आगे बढ़ेगा
८९. हमारे मुस्लिम संत
९०. नन्हा अबाबील
९१. स्वामी विवेकानंद
९२. आप भला, जग भला
९३. नासिक
९४. सूर के पद
९५. संत वेमन्ना
९६. आराम हराम है
९७. गोरा-बादल
९८. पाटलिपुत्र
९९. महर्षि अगस्त्य
१००. दानवीर कर्ण
१०१. शेख सादी
१०२. गोदावरी
१०३. कुम्हार की बेटी
१०४. नर्मदा
१०५. शंकराचार्य
१०६. अमरनाथ
१०७. महारानी अहिल्याबाई
१०८. पढ़ेंगे-लिखेंगे...
१०९. कोणार्क
११०. मंगू भैया

मूल्य : प्रत्येक का ३७ नये पैसे ४० नये पैसे

१४५

४० नये पैसे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman